अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न हो सकते हैं-
(क) सामान्य गर्भज मनुष्य (ख) सामान्य संयत मनुष्य
(ग) अप्रमत्त आराधक संयमी (घ) समुच्चय मनुष्य (ग)

(ii) कोई भी जीव किसी एक घर में लगातार उत्कृष्ट स्थिति के कितने भव से अधिक नहीं कर सकता है-
(क) 8 (ख) 4
(ग) 15 (घ) अनन्त भव (क)

(iii) गमा का अधिकार किस आगम में चलता है-
(क) भगवती सूत्र (ख) प्रज्ञापना सूत्र
(ग) जीवाभिगम सूत्र (घ) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र (क)

(iv) 10 भवनपति एवं एक वाणव्यंतर 11 घरों में आने वाले जीव कितने प्रकार हैं-
(क) 4 (ख) 2
(ग) 1 (घ) 5 (घ)

(v) पृथ्वी, पानी और वनस्पति, इन तीन घरों में आने वाले जीवों के कुल आगति स्थान हैं-
(क) 6 (ख) 78
(ग) 39 (घ) 43 (ख)

(vi) अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं-
(क) सम्यग्दृष्टि जीव (ख) तीन शुभ लेश्या वाले जीव
(ग) नारकी देवता से आने वाले (घ) ये तीनों ही (घ)

(vii) जघन्य और उत्कृष्ट के सभी गमों को मिलाकर नाणत्ता होते हैं-
(क) 715 (ख) 1998
(ग) 60 (घ) 2805 (ख)

(viii) चौथी नरक में आने वाले के संहनन होते हैं-
(क) 6 (ख) 5
(ग) 4 (घ) 3 (ग)

(ix) युगलिक तिर्यंच व युगलिक मनुष्य मरकर वैमानिक के घरों में आते हैं-
(क) 1-2 देवलोक के (ख) 1-8 देवलोक के
(ग) 1-4 देवलोक के (घ) 1-12 देवलोक के (क)

(x) जघन्य अढ़ाई कोस और उत्कृष्ट तीन कोस अवधिज्ञान का क्षेत्र नारकों का है-
(क) रत्नाप्रभा (ख) धूमप्रभा
(ग) बालुका प्रभा (घ) तम प्रभा (ग)

(xi) अधोलोक में अधिक देखते हैं-
(क) भवनपति और व्यंतरदेव (ख) ज्योतिष्क
(ग) वैमानिक (घ) नारक (ग)

(xii) ग्यारहवें स्वप्न में तीर्थंकर भगवान की माता देखती हैं-
(क) कुम्भ कलश (ख) क्षीर समुद्र
(ग) पद्म सरोवर (घ) रत्नों की राशि (ख)

(xiii) चौथे आरे के उतरते मनुष्य की स्थिति होती है-
(क) 20 वर्ष (ख) 16 वर्ष
(ग) 1 करोड़ पूर्व (घ) 100 वर्ष झाझेरी (घ)

(xiv) सप्रदेशी-अप्रदेशी के थोकड़े का अधिकार चलता है-
(क) भगवती 2/5 (ख) भगवती 16/6
(ग) भगवती 6/4 (घ) नन्दीसूत्र (ग)

(xv) भवी द्वार में बहुत जीव अपेक्षा 1,5,6 ये तीन भंग पाते हैं-
(क) 24 दण्डक (ख) 19 दण्डक
(ग) पाँच स्थावर (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) वनस्पतिकाय से वनस्पतिकाय में आने वाले पहले गमे से अधिकतम अनन्त भव नहीं कर सकते हैं। (नहीं)

(ii) वैक्रिय के 34 घरों में 10 ज्योतिषी का एक घर है। (हाँ)

(iii) 10 भवनपति एवं एक वाणव्यंतर 11 घरों में आगति स्थान 55 हैं। (हाँ)

(iv) वैक्रिय के 15 घरों के जीवों के गमा 270 नहीं हैं। (नहीं)

(v) औदारिक जीवों के औदारिक घरों में नाणत्ता 879 हैं। (हाँ)

(vi) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर पहली से सातवीं नरक तक के घरों में नहीं आते हैं। (नहीं)

(vii) पाँच स्थावर और असन्नी मनुष्य में मिथ्यादृष्टि होती है। (हाँ)

(viii) वायुकाय का उपपात उत्कृष्ट 3000 वर्ष है। (हाँ)

(ix) पहली से सातवीं नारकी तक के जीव मरकर मनुष्य के घर में आते हैं। (नहीं)

(x) सनत्कुमार एवं माहेन्द्र देव नीचे से चौथी नारकी के चरमान्त को जानते हैं। (नहीं)

(xi) जो अवधिज्ञान जीव को किसी स्थान विशेष पर ही होता है, वह अनुगामिक अवधिज्ञान होता है। (नहीं)

(xii) चिन्ता स्वप्न यथातथ्य और अयथातथ्य होता है। (नहीं)

(xiii) अवसर्पिणी काल में 21 हजार वर्ष तक ही धर्म का पालन हो पाता है। (नहीं)

(xiv) जिन्हें सिद्ध बने 2 समय से अधिक समय हुआ,वे अप्रदेशी सिद्ध कहलाते हैं। (नहीं)

(xv) आहारक शरीरी मनुष्य शाश्वत होते हैं, अतः इनमें 6 ही भंग होते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(i)	वैक्रिय के 34 घर	(क) गमा 252	101 आगति स्थान
(ii)	जीव के कुल भेद	(ख) तिर्यंच पंचेन्द्रिय का घर	48
(iii)	सातवीं नरक का जीव	(ग) 101 आगति स्थान	तिर्यंच पंचेन्द्रिय का घर
(iv)	असंख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य	(घ) नाणत्ता 715	गमा 252
(v)	चौदह प्रकार के देवता	(च) नाणत्ता 89	पृथ्वी, पानी, वनस्पति
(vi)	औदारिक जीवों के वैक्रिय घरों में आने के	(छ) पृथ्वी, पानी, वनस्पति	नाणत्ता 715
(vii)	औदारिक जीवों के पृथ्वीकाय के घर में आने के	(ज) 48	नाणत्ता 89
(viii)	नवें देवलोक सर्वार्थसिद्ध विमान तक	(झ) 10000 वर्ष	7 आगति स्थान
(ix)	वाणव्यंतर जघन्य स्थिति	(य) 72	10,000 वर्ष
(x)	आरण, अच्युत देव	(र) नीचे छठी नारकी का चरमान्त	नीचे पाँचवीं नारकी का चरमान्त
(xi)	मध्य के 3 ग्रैवेयक देव	(ल) नीचे पाँचवीं नारकी का चरमान्त	नीचे छठी नारकी का चरमान्त
(xii)	स्वप्न	(व) 7 आगति स्थान	72
(xiii)	चौथे आरे में युवा अवस्था	(क्ष) भंग 6	32 वर्ष
(xiv)	शाश्वत बोल	(त्र) 32 वर्ष	भंग 3
(xv)	अशाश्वत बोल	(ज्ञ) भंग 3	भंग-6

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मुझमें कम से कम 9 वर्ष की आयु वाले संयत मनुष्य ही उत्पन्न हो सकते हैं। — नव ग्रैवेयक/अनुत्तर विमान

(ii) मेरे 9 भेद हैं किन्तु घर एक ही है। — नव ग्रैवेयक

(iii) मेरे घर में आने के 220 आगति स्थान हैं। — औदारिक

(iv) मैं मरकर नरक-देवों में जाने पर वैक्रिय के 12 घरों में ही आता हूँ। — असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय

(v) मेरा उपपात उत्कृष्ट 22000 वर्ष है। — पृथ्वीकाय

(vi) मेरी अन्तर्मुहूर्त की आयु होने पर अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर उत्कृष्ट पृथक्त्व धनुष तक हो सकती है। — संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय

(vii) मैं ऐसा तिर्यंच युगलिक हूँ जो समकित में ही देवगति का आयुष्य बांधता हूँ। — सम्यग्दृष्टि

(viii) मुझमें प्रथम संहनन वाले मनुष्य-तिर्यंच ही आकर उत्पन्न होते हैं। — सातवीं नारकी

(ix) मेरी अवगाहना जघन्य पृथक्त्व धनुष से लेकर उत्कृष्ट 6 गाउ तक की हो सकती है। — तिर्यंच युगलिक

(x) मुझमें अवधिज्ञान का क्षेत्र जघन्य तीन कोस और उत्कृष्ट साढ़े तीन कोस होता है। — शर्करा प्रभा/दूसरी नरक

(xi) मैं ऐसा अवधिज्ञान हूँ जो क्षेत्र और काल सापेक्ष होता हूँ। — मध्यम अवधिज्ञान

(xii) स्वप्न में मुझे अपने घर गीत गाते हुए देखा जाता है। — लक्ष्मी

(xiii) मेरा कालमान एक कोटाकोटी सागर में 42000 वर्ष कम का है। — दु:खमा सुखमा/चौथा आरा

(xiv) मैं सप्रदेशी-अप्रदेशी थोकड़े का आठवाँ द्वार हूँ। — कषाय द्वार

(xv) मैं नारकी-देवों में अशाश्वत होने से मुझमें छह भंग पाये जाते हैं। — असंज्ञीपना

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) 10 भवनपति एवं 1 वाणव्यंतर (11 घरों में) आने वाले जीवों के नाम लिखिए।

उ. (5) असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय,संख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य व असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य।

(ii) लब्धि के 20 द्वारों में अन्तिम 8 द्वार लिखिए।

— 1. इन्द्रिय, 2. समुद्घात, 3. वेदना, 4. वेद, 5. आयुष्य, 6. अध्यवसाय 7. अनुबंध और 8. कायसंवेध

(iii) औधिक गमा से क्या तात्पर्य है ?

— औधिक गमा का तात्पर्य जीव की जघन्य से लेकर उत्कृष्ट स्थिति से है।

(iv) असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 2 भव ही क्यों लिए गए हैं ?

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय के घरों में आता है तो पुनः असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय नहीं बनता है।

अतः 2 भव ही लिये हैं।

(v) अवधिज्ञान की कोई एक परिभाषा लिखिए।
नोटः- इनमें से कोई एक मान्य-
1. मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना सीधे आत्मा से रूपी पदार्थों को जानना अवधिज्ञान कहलाता है।
2. द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भाव की मर्यादा के साथ रूपी पदार्थों को सीधे आत्मा से जानना अवधिज्ञान कहलाता है।
3. अवधि ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से रूपी पदार्थों (पुद्गलों) को सीधे आत्मा से मर्यादित रूप से जानना अवधिज्ञान कहलाता है।

(vi) तैजस, कार्मण एवं भाषा वर्गणा को जानने वाला अवधिज्ञान से क्षेत्र और काल की अपेक्षा किनको व कितना जानता है ?

उ. क्षेत्र की अपेक्षा असंख्येय द्वीप-समुद्रों को तथा काल की अपेक्षा पल्योपम के असंख्यातवें भाग को जानता है। वह काल से भव पृथक्त्व अर्थात् दो से 9 भवों तक को जानता है।

(vii) सप्रदेशी किसे कहते हैं ?
जिसको उत्पन्न हुए दो या दो से अधिक समय हो गया है, उसे सप्रदेशी कहते हैं।

(viii) आहारक द्वार के अन्तर्गत समुच्चय एक जीव तथा बहुत जीव की अपेक्षा कितने तथा कौन-कौन से भंग पाए जाते हैं ?

एक जीव की अपेक्षा सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी रूप 1,2 भंग पाया जाता है।

बहुत जीव अपेक्षा 1,5,6 ये तीन भंग पाये जाते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) कौन-कौन से 9 बोलों में नाणत्ता होता है ? गाथा तथा नाम लिखिए।
''उच्चत्तमेव लेस्सा दिट्ठी, नाण-जोग-समुग्घाओ।
आउ अज्झवसाणाणुबंधो, नव ठाणा नाणत्ता होइ।।
1. ऊँचाई (अवगाहना), 2. लेश्या, 3. दृष्टि, 4. ज्ञान-अज्ञान, 5. योग, 6. समुद्घात, 7. आयुष्य, 8. अध्यवसाय, 9. अनुबंध, इन नौ बोलों में नाणत्ता होता है।

(ii) पृथ्वीकाय आदि पाँच स्थावरों के संस्थान लिखिए।
पृथ्वीकाय का मसूर की दाल के आकार का, अप्काय का पानी के बुलबुले के आकार का, तेउकाय का सूइयों के भारी के आकार का, वायुकाय का ध्वजा-पताका के आकार का एवं वनस्पति का नाना प्रकार का।

(iii) उत्कृष्ट अवधिज्ञान की विशेषता लिखिए।
उत्कृष्ट अवधिज्ञान तो चारित्रवान संयमी को ही होता है। उत्कृष्ट अवधिज्ञान को परमावधिज्ञान भी कहते हैं। इस ज्ञान की यह विशेषता है कि उन साधु-साध्वियों को अन्तर्मुहूर्त में नियमा केवल ज्ञान प्राप्त हो जाता है। उत्कृष्ट अवधिज्ञानी (परमावधिज्ञानी) पुद्गल के सूक्ष्मतम अंश परमाणु को भी प्रत्यक्ष जान सकता है।

(iv) बारहवें स्वप्न में तीर्थंकर की माता क्या देखती है और उसका क्या फल होता है ?
बारहवें स्वप्न में भवन या विमान को अपने चारों तरफ प्रदक्षिणा देता हुआ देखती है। इसका फल यह है कि तीर्थंकर भगवान बहुत से देवी-देवताओं के पूजनीय होते हैं।

(v) 'सोना और जागना' द्रव्य और भाव की अपेक्षा स्पष्ट कीजिए।
नींद लेना द्रव्य से सोना है और विरति (त्याग पच्चक्खाण) रहितपना भाव से सोना है। जो जीव सर्व विरतिपणा से रहित हैं वे भाव से सोते हुए हैं। जो जीव सर्व विरति वाले हैं वे भाव से जागते हैं और जो जीव देश विरति वाले हैं वे साते जागते हैं।

(vi) वर्तमान काल को हुण्डा अवसर्पिणी काल क्यों कहते हैं ?
ऐसी घटनायें जो सामान्यतः नहीं होती हैं, वे आश्चर्यजनक घटनायें कहलाती हैं। उन्हें आश्चर्य के नाम से कहा जाता है। ये आश्चर्य अनन्त अवसर्पिणी, अनन्त उत्सर्पिणी में एकाध बार होते हैं। अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र में ऐसे दस आश्चर्य हुए हैं। इन्हीं आश्चर्यों के कारण से वर्तमान काल को हुण्डा अवसर्पिणी काल भी कहते हैं।

(vii) छह आरों में मनुष्य की स्थिति लिखिए।

आरा	लगते	उतरते
1	3 पल्योपम	2 पल्योपम
2	2 पल्योपम	1 पल्योपम
3	1 पल्योपम	1 करोड़ पूर्व
4	1 करोड़ पूर्व	100 वर्ष झाझेरी
5	100 वर्ष झाझेरी	20 वर्ष
6	20 वर्ष	16 वर्ष

(viii) सप्रदेशी और अप्रदेशी के 6 भंगों के नाम लिखिए।
1. सिय सप्रदेशी
2. सिय अप्रदेशी
3. सप्रदेशी एक अप्रदेशी एक
4. सप्रदेशी एक अप्रदेशी बहुत
5. सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी एक
6. सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी बहुत